आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:–प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2733 • उदयपुर, रविवार 19 जून, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांगता –मुक्ति का यज्ञ वर्षो से प्रारंभ किया है। इस प्रयास–सेवा से 4,50,000 से अधिक दिव्यांग भाई–बहिनों को सकलांग होने का हौसला मिला है। लाखों दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाकर जीवन की मुख्यधारा से जोड़ा गया है। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 21 से 23 मई को 34 आसाम राईफल्स गुण्ड, गादंरबल में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता 34 आसाम राईफल्स, श्रीनगर रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 157, कृत्रिम अंग माप 10, कैलिपर माप 90 की सेवा हुई तथा 34 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री कर्नल राजेन्द्र जी कराकोटी (कमाण्ड ऑफिसर, आसाम राईफल्स), अध्यक्षता मेजर अनुप जी (मेजर, आसाम राईफल्स), विशिष्ट अतिथि श्री प्रशान्त जी भैया (अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान), श्रीमती वन्दना जी अग्रवाल (निदेशिका, नारायण सेवा संस्थान) रहे।

डॉ. अंकित जी चौहान (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ.मानस रंजन जी साहू (पी.एन.डो.), श्री सुशील कुमार जी (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में श्री लालसिंह जी भाटी (शिविर प्रभारी), श्री दिलीप सिंह जी चौहान (उप प्रभारी), श्री फतेह लाल जी (फोटोग्राफर), श्री मुकेश जी त्रिपाठी (सहप्रभारी), श्री बहादुर सिंह जी मीणा, श्री देबीलाल जी मीणा (सहायक) ने भी सेवायें दी।

ग्वालियर (मध्यप्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांगता–मुक्ति का यज्ञ वर्षो से प्रारंभ किया है। इस प्रयास–सेवा से 4,50,000 से अधिक दिव्यांग भाई–बहिनों को सकलांग होने का हौसला मिला है। लाखों दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाकर जीवन की मुख्यधारा से जोड़ा गया है। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 17 मई को कैसर हॉस्पीटल आमखों, ग्वालियर में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता लांयस क्लब, ग्वालियर आस्था रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 169, कृत्रिम अंग माप 55, कैलिपर माप 20 की सेवा हुई तथा 06 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि डॉ. बी.आर. जी श्रीवास्तव (कैंसर हॉस्पीटल, डायरेक्टर), अध्यक्षता श्रीमती रजनी जी अग्रवाल (अध्यक्ष, लांयस क्लब आस्था), विशिष्ट अतिथि श्री जगदीश शरण जी गुप्ता (रीजन चेयरपर्सन), श्रीमान् तालीब जी खान (जोन चेयरपर्सन), श्रीमान् रमेश जी श्रीवास्तव (गाइडिंग लायन)रहे।

डॉ. सिद्धार्थ जी लाम्बा (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ. रामनाथ जी ठाकुर (पी.एन.डो.), श्री किशन जी सुथार (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री गोपाल जी गोस्वामी, श्री हरीश सिंह जी रावत (सहायक) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ–पांव) माप शिविर

दिनांक : 19 जून, 2022

▪ मंगलम पोलो ग्राउण्ड के सामने, कोर्ट रोड, शिवपुरी मध्यप्रदेश

▪ गीता आश्रम, हनुमान चौराहा, जैसलमेर, राजस्थान

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन,नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

1,00,000 We Need You !
से अधिक सहयोग देकर, दिव्यांगों के सपनों को करें साकार
अपने शुभ नाम या प्रियजन की स्मृति में कराये निर्माण

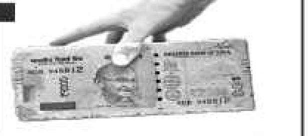

मानवता के मन्दिर में बनेंगे कई वार्ड-सेवा कक्ष

" 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल " 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त" निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी " भारत की पहली निःशुल्क सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट " प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों को निःशुल्क आवासीय व्यावसायिक प्रशिक्षण

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
Cont. : 0294-6622222, +917023509999 (WhatsApp)

सेंट्रल फेब्रिकेशन यूनिट शुरू

पैरा ऑलम्पियन-अर्जुन अवार्डी दीपा जी मलिक ने किया उद्घाटन

पैरालम्पिक कमेटी ऑफ इण्डिया की अध्यक्ष एवं अर्जुन अवार्डी पैरा ऑलम्पियन दीपा मलिक ने दिव्यांगजन से कहा कि वे दिल से डर और निराशा को दूर करें और अत्याधुनिक सहायक उपकरणों की मदद लेकर जीवन को संवारने की पहल करें। 15 मई नारायण सेवा संस्थान के लियों का गुड़ा परिसर में अंतर्राष्ट्रीय रोटरी के सहयोग से दो करोड़ की लागत से स्थापित देश की पहली अत्याधुनिक कृत्रिम अंग निर्माण इकाई का उद्घाटन कर रही थी। उन्होंने अपने जीवन संघर्ष से रूबरू कराते हुए कहा कि विकलांगता के दंश के बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और सार्थक जीवन के लिए सकारात्मक सोच और कड़े परिश्रम के साथ आगे बढ़ी। नारायण सेवा संस्थान द्वारा दिव्यांगजन के जीवन को बेहतर बनाने का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि इस ईकाई में बनने वाले कृत्रिम अंग दिव्यांगजन को सामान्य रूप से अपनी दिनचर्या के निर्वहन में सहायक होंगे।

संस्थान संस्थापक पूज्य गुरुदेव कैलाश जी 'मानव' ने मुख्य अतिथि दीपा जी मलिक, विशिष्ट अतिथि पूर्व विधायक श्री ज्ञानदेव जी आहूजा व रोटरी क्लब, उदयपुर मेवाड़ के पदाधिकारियों का स्वागत किया। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी भैया ने कहा कि बढ़ती सड़क दुर्घटनाएं चिंता का विषय है। इसमें हाथ–पैर खोने वाले ही नहीं, उनके परिवार भी अत्यंत कष्टदायी जिन्दगी जीने को मजबूर हो जाते हैं। आंकडो की बात करें तो देश में लगभग 2 प्रतिशत हिस्सा दिव्यांगता का शिकार है, इसमें ज्यादा संख्या कटे–हाथ पैर वालों की है। ऑटोबोक जर्मनी से आयातित मशीनों से इस इकाई में बनने वाले

कृत्रिम अंग दिव्यांगजन को निःशुल्क उपलब्ध करवायें जायेंगे जो मशीनों से इस उनके जीवन को आसान बनायेंगे। रोटरी क्लब ऑफ उदयपुर–मेवाड़ के संरक्षक हंसराज चौधरी ने कहा कि नारायण सेवा संस्थान द्वारा दिव्यांगजन के कष्टदायी जीवन को बेहतर बनाने के पिछले 37 वर्षो से किये जा रहे कार्यों से इम्यूरी ड्यूड हिल्स यूएसए काफी प्रभावित हुआ और उसने इस इकाई में सहयोग के लिए रोटरी क्लब, उदयपुर की अनुशंसा को प्राथमिकता के आधार पर स्वीकार किया। इससे संस्थान को देश ही नहीं विदेशों में भी कृत्रिम अंग लगाने के कार्यो में गति और आसानी होगी। संस्थान के प्रोस्थेटिक एंव ऑर्थोटिक यूनिट हेड मानस रंजन जी साहू ने नव स्थापित सेन्ट्रल फेबिक्रेशन यूनिट की प्रणाली और उपयोगिता की जानकारी दी। उद्घाटन समारोह में रोटरी क्लब, उदयपुर के अध्यक्ष आशीष जी हरकावत, पूर्व प्रांतपाल श्री निर्मल जी सिंघवी, पूर्व अध्यक्ष श्री सुरेश जी जैन, संस्थान संह सहसंस्थापिका श्रीमती कमला देवी जी अग्रवाल, निदेशक वंदना जी अग्रवाल तथा परियोजना प्रभारी श्री रविश जी कावड़िया भी मौजूद थे। संचालन श्री महिम जी जैन ने किया।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

अगंदजी महाराज निकले निर्भीक होकर के औरे जैसे ही आगे पहुँचे कोई राक्षस मिला। तो पहले तो रावण का एक पुत्र ही मिल गया। उसमे भी युवा बल, अगंद भी युवा बल उसने गलती से अगंद को लात मार दी। ऐसी लात पकड़ के पछाड़ा महाराज उसका मर्दन कर दिया। अब तो राक्षस सब डरने लग गये और वो आगे से आगे रास्ता बतावे। रावणजी की सभा इधर है इधर, पधारो पधारो। हमारे साथ आइये, हम आपको रावण की सभा में ले चलते है। और रावण की सभा में पहुँच गये और द्वारपाल को कहा– कहिये आपके राजा रावण को। बाली पुत्र अगंद मिलने आया है।

अंगद नाम बाली कर बेटा।
तासों कबहुँ भई न ही भेंटा।।
अंगद बचन सुनत सकुचाना।
रहा बालि बानर मैं जाना।।

हाँ, महाराज अगंदजी ने जाकर देखा जैसे काजल का पहाड़ हो। काला कलूटा सोने के सिहांसन पर एक घमण्डी बैठा हूआ है। अच्छा अच्छा वानर आओ। आप अपना परिचय बताओ। मेरे पिता बाली की कांख में आप दबे रहे थे। सहस्त्रबाहु ने आपका मर्दन किया था। है रावण मैं आपको समझाने आया हूँ। आप अभी सद्बुद्धि को प्राप्त हो। सीताजी को आगे करो। अपने गले में कुदाली लगाओ, मुँह में तिनका लगाओ, हाथ जोड़कर के अपने भाइयों के साथ, बेटों के साथ चलो। प्रभु से क्षमा मांग लो तो प्रभु आपको क्षमा कर देंगे।

कितना समझाया पर रावण का अभिमान। अच्छा, हाँ हाँ बाली नाम का एक वानर था तूं उसका पुत्र है क्या ? अरे तेरे पिता का तो रामजी ने वध कर दिया। फिर भी तूं उनका साथ दे रहा है। बोले–मैं परमात्मा का साथ दे रहा हूँ रावण। तू तो छली है, कपटी है। आश्रम से सीताजी का हरण करके लाया, तेरे को लज्जा नहीं आयी। बहुत समझाया, तब नहीं समझा तो अगंदजी ने पैर जमा दिया। है रावण मैं तेरे को चुनौती देता हूँ मैंरे पेर को यदि तूं उठा देगा तेरी सभा में तो रामजी लौट जायेंगे।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

नारायण सेवा ने स्कूल में दी पानी की टंकी

पंचायत समिति गिर्वा की पंचायत देवली के खेजड़ा गांव में शुक्रवार को नारायण सेवा संस्थान ने राजकीय प्राथमिक विद्यालय को पानी की टंकी भेंट की। इस अवसर पर मौजूद ग्रामीणों ने संस्थान का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इससे अध्ययनरत बच्चों को पेयजल के लिए बाहर नहीं जाना पड़ेगा।

निर्जला एकादशी के क्रम में संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि निदेशक वंदना जी अग्रवाल एवं दिव्यांग भाई बंधुओं की टीम ने माली कॉलोनी चौराहे पर शरबत व आम का वितरण किया। जबकि बड़ी गांव के जरूरतमंदों व ग्रामीणों को वस्त्र बिस्कीट वितरण, पक्षियों के परिण्डे एवं भोजन बांटा गया। इस दौरान संस्थान के दिलीप सिंह जी, फतेहलाल जी, मुन्ना जी आदि उपस्थित रहे।

सेवा - स्मृति के क्षण

सम्पादकीय

भक्ति जगत् में दो वाक्यांश प्रचलित हैं। एक है–हरिकृपा और दूसरा है हरि इच्छा। यदि अपने अनुकूल कोई कार्य संपादित हो गया तो हरिकृपा। यदि कोई कार्य अपने मनानुसार नहीं हो पाया तो हरि इच्छा। यानी जो कुछ भी हुआ वह केवल मेरे प्रयास से संभव न था। प्रयास तो हरेक व्यक्ति करता ही है पर सफलता हरेक को कहाँ मिलती है, इसलिये जब तक हरिकृपा नहीं होगी तब तक कार्य हो पाना असंभव है। श्रेय मेरा नहीं हरि का है। मैं तो केवल चाहने वाला या करने वाला हूँ, कराने वाला तो हरि ही है।

ठीक वैसे ही कोई कार्य मेरे अनुसार नहीं हो पाया तो उसमें हरि की इच्छा रही होगी, क्योंकि हो सकता है यह समय उस कार्य की सिद्धि के लिये ठीक नहीं होगा। मैंने तो चाहा व किया पर वह उचित था कि नहीं, अभी आवश्यक था या नहीं ? यह तो हरि ही जानता है। इसलिये नहीं हो पाया तो मैं क्यों मन में मलाल रखूं। हरि इच्छा थी कि यह कार्य अभी इस रूप में न हो। ये दोनों सूत्र अहंकार और विषाद दोनों आवेगों को नियंत्रित करने के रामबाण सूत्र हैं। इन्हें अपनाने वाला सदा प्रसन्न व निर्भार रहता है।

कुछ काव्यमय

सत्संग का साबुन
अंतस् के मैल से
मुक्त कर देता है।
निर्मल मन वाला ही
परमात्मा के दिल में
प्रवेश लेता है।
पावन करने हो,
हमारे बाह्य व अंतर अंग।
तो भगीरथ प्रयास है,
नियमित सत्संग।

अपनों से अपनी बात

सेवा बनायें दिनचर्या का अंग

सुबह जल्दी, बहुत जल्दी उठना, दुकान पर जाना, भट्टी चेतन करना, आलू उबालना, मसाले तैयार करना, दूध फेंटना और भी कई काम। उधर दुकान में झाड़ू लगाना, पानी भरना आदि। और यह कार्यक्रम रात में, देर रात तक कड़ाहियों के मांजनें और भट्टी ठंडी करने तक चलता रहता है। यह दिनचर्या, बल्कि कहना चाहिए जीवनचर्या है एक हलवाई की जो रात–दिन अपने परिवार के भरण–पोषण के लिए धनोपार्जन के काम में जुटा रहता है।

यदि यही व्यक्ति किसी दिन इस दिनचर्या से हट के कोई अन्य कार्य करे जिसमें धनोपार्जन की गुंजाईश न हो, उदाहरणार्थ– निःशुल्क सेवा आदि, तब उसका मस्तिष्क तेजी से दौड़ेगा– "यह कार्य करने में मुझे क्या लाभ होगा, कहाँ मेरे नाम का उल्लेख

होगा– अथवा इतने घंटों की कार्य–हानि के अलावा कुछ भी हाथ न लगेगा।" उस दिन घर लौटने पर उसकी पत्नी भी कहेगी –"आज तो आपने काफी काम किया है, थक गए होंगे।" सामान्य कार्यक्रम के अंतर्गत सुबह पांच बजे से रात ग्यारह बजे तक काम करने के उपरांत भी घर पहुंचने पर ऐसी टिप्पणी सुनने को नहीं मिलती। विचार किया जाय तो इसके पीछे दो कारण अनुभव होते हैं –धनोपार्जन और सामान्य दिनचर्या।

हलवाई ही क्यों, न्यूनाधिक रूप में प्रत्येक व्यक्ति का –संभवतः हमारा और आपका भी दृष्टिकोण इससे बहुत अधिक भिन्न नहीं है। सामान्य व्यक्ति प्रत्येक कार्य को धन की तुला पर तौलता है। सम्पूर्ण दिनचर्या ही धन पर आधारित हो गई है। लीक से हट कर कोई कार्य थकावट का कारण बन जाता है। वस्तुतः हमारी सोच ही ऐसी हो गई है। सेवा कार्य को हमने अपनी दिनचर्या में गिना ही नहीं। यही कारण है कि यह कार्य हमें "अतिरिक्त कार्य" लगता है, इसमें थकान होती है, संभवतः नाम न होने का दुःख भी होता है। आइये, हम अपने सोच को बदलने का प्रयत्न करें। सेवा कार्य को भी दिनचर्या के अंग के रूप मानें ताकि इसके लिए अलग से प्रयास न करना पड़े, अलग से सोचने की आवश्यकता न पड़े। जीवन के अन्य कार्यों के साथ–साथ सेवा रूपी प्रभु कार्य भी निर्विघ्न चलता रहे।

–कैलाश 'मानव'

अनोखा कर्मचारी

बात 1947 की है। लेस्टर वण्डरमेन नाम का एक व्यक्ति मेक्सवेल सेकिम एण्ड कम्पनी में काम करता था। यह एक विज्ञापन एजेन्सी थी। एक दिन एजेन्सी के मालिक को लगा कि कम्पनी के मुनाफे का अधिकांश हिस्सा तो कर्मचारियों में ही चला जाता है, अगर वह कर्मचारियों की छंटनी कर देगा तो निश्चित ही उसे अधिक फायदा होगा। अपनी योजनानुसार उसने कई कर्मचारियों को निकाल दिया, लेस्टर वण्डरमेन भी उनमें से एक थे।

नौकरी से निकाले जाने के बाद भी वह एजेन्सी में आकर काम करते रहे। दूसरे कर्मचारी अक्सर उनसे कहते – जब तुम्हें यहाँ से निकाल दिया गया है

तो फिर, यहाँ काम क्यों कर रहे हो?

"मैं यहाँ बिना तनख्वाह के काम कर रहा हूँ। मुझे लगता है कि मैं इस विज्ञापन एजेन्सी के मालिक से बहुत कुछ सीख सकता हूँ।" वण्डरमेन ने उत्तर दिया।

एजेन्सी के मालिक वण्डरमेन को देखकर भी नजरअंदाज करते रहे। उन्होंने एक महीने तक वण्डरमेन को अनदेखा किया एवं तनख्वाह भी नहीं दी, लेकिन वण्डरमेन ने फिर भी हार नहीं मानी और वे काम करते रहे।

एक दिन हार कर कम्पनी के मालिक वण्डरमेन के पास गए और बोले –मैंने पहले कभी ऐसा व्यक्ति नहीं देखा, जिसे काम तनख्वाह से ज्यादा प्रिय हो।

वण्डरमेन ने वहीं पर काम करके विज्ञापन की अनेक बारीकियों को सीखा। जब उन्हें वहाँ काम करते–करते बहुत समय बीत गया तो, उन्होंने अपनी समझ और अपने तरीके से विज्ञापन बनाने शुरू कर दिए।

इसके पश्चात् वह विज्ञापन की दुनिया में इस कदर छा गए कि उन्हें इस क्षेत्र में सदी का सबसे सफल व्यक्ति माना गया। आज भी लोग उन्हें "Father of Direct Marketing" के रूप में जानते हैं।

अतः हम सभी को शुरूआती असफलता के बावजूद मेहनत, लगन, आस्था और विवेक के काम करना होगा, क्योंकि सफलता अवश्य मिलेगी। **– सेवक प्रशान्त भैया**

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

शिविर के दिन सौ–डेढ़ सौ बच्चे एकत्र हो गये। कोई दूर से आया था तो कोई पास से। सबके अंगों में कुछ न कुछ समस्या थी। डॉक्टर ने बच्चों में से 26 बच्चों को चुना जिनके ऑपरेशन संभव थे। इन सबके एक्स–रे लिये गये। एक्स–रे मशीन उदयपुर से ही किराये पर ले आये थे। एक कमरे में इसे स्थापित कर दिया था। इन सभी बच्चों को मुम्बई ले जाने की व्यवस्था की।

बच्चों को महीने भर तक मुम्बई के अस्पताल में रखा। सबके लिये चैनराज अपने घर से खाना बनवा करक लाते। सभी बच्चों का ऑपरेशन सफल हो गया तो सब प्रसन्न हो गये। 8 हजार प्रति ऑपरेशन के हिसाब से 26 बच्चों के ऑपरेशन के 2 लाख 8 हजार रु. लोगों से चन्दा मांग कर एकत्र कर लिये थे। एक लाख रुपये डॉक्टर को पहले ही दे दिये थे, शेष 1 लाख 8 हजार रु. और देने लगे तो डॉक्टर ने उन्हें 8 लाख 8 हजार रु. का बिल थमा दिया। अग्रिम राशि के लए लाख काट कर वह 7 लाख 8 हजार रु. और मांग रहा था।

कैलाश व चैनराज दोनों डॉक्टर की बात से भौंचक्के रह गये थे। वे डॉक्टर को समझान लगे कि 8 हजार प्रति ऑपरेशन के हिसाब से तो 26 बच्चों के 2 लाख 8 हजार ही होते हैं। डॉक्टर ने कहा कि 8 हजार रु. की फीस प्रति बच्चा नहीं होकर प्रति ऑपरेशन है। एक एक बच्चे के तीन–तीन, चार–चार ऑपरेशन हुए हैं। कुल 101 ऑपरेशन हुए जिनकी रकम 8 लाख 8 हजार होती है। चैनराज के तो पांवों तले से जमीन खिसक गई। कैलाश को भी काटो तो खून नहीं। दोनों डॉक्टर की धूर्तता को समझ रहे थे। वे पुनः अपनी बात कहने लगे तो डॉक्टर ने साफ कह दिया कि जब तक 7 लाख 8 हजार रुपये नहीं दोगे यहां से एक भी बच्चे को नहीं ले जा सकते। 1 लाख 8 हजार तो उनके पास थे, 6 लाख रु. और कहां से लाते। डॉक्टर ने उन्हें धोखे में रखकर फंसाया था मगर अब कर भी क्या सकते थे। सभी बच्चे यहां बंधक थे।

गुस्सा तो बहुत आ रहा था, बार बार मन में विचार उठता कि डॉक्टर की शिकायत कर दें मगर गरीब, असहाय बच्चों के चेहरे सामने आ जाते। डॉक्टर ने जैसी क्रूरता प्रदर्शित की थी उससे वह कुछ भी कर सकता था। कैलाश बच्चों की जिन्दगी खतरे में नहीं डालना चाहता था। 15 दिन तक बच्चे मुम्बई के उस अस्पताल में बंधक रहे। चैनराज व कैलाश ने जैसे तैसे 5 लाख रु. जुटाये, फिर भी एक लाख रु. कम पड़ रहे थे। अब कोई चारा भी नहीं था, डॉक्टर को 5 लाख रु. देते हुए कहा कि इतने ही पैसे इकट्ठे हुए हैं, बच्चों को छोड़ना हो तो छोड़ो वरना खुद ही इन्हें पालो। डॉक्टर भी इन 15 दिनों में परेशान हो चुका था। उसने 5 लाख रु. लिये और बच्चों को मुक्त किया। बच्चों के हर्ष का पारावार नहीं था, उन्हें तो मानों एक नई जिन्दगी मिल गई थी। सभी को वापस उदयपुर लाए तो उन्हें चलता फिरता देख संस्था से जुड़े सभी लोगों में खुशी की लहर दौड़ गई।

अंश - 130

चने की दाल के 5 फायदे, जरुर जानें

1 चने की दाल हमारे शरीर में आयरन की कमी को पूरा करती है और हीमोग्लोबिन का स्तर बढ़ाने में मदद करती है। इसमें मौजूद अमीनो एसिड शरीर की कोशिकाओं को मजबूत करने में मददगार है।

2 डाइबिटीज पर नियंत्रण के लिए चने की दाल का सेवन बेहद फायदेमंद होता है। यह ग्लूकोज की अधिक मात्रा को अवशोषित करने में काफी मददगार है। सौंदर्य बढ़ाने के लिए चने की दाल का बेसन त्वचा पर लगाना लाभदायक होता है।

3 चने की दाल का सेवन कर आप कब्ज जैसी समस्याओं से आसानी से निजात पा सकते हैं। इतना ही नहीं, पीलिया जैसी बीमारी में चने की दाल का सेवन बहुत फायदेमंद होता है।

4 फाइबर से भरपूर चने की दाल कोलेस्ट्रॉल को कम कर आपका वजन कम करने में भी बेहद फायदेमंद साबित होती है। यह पाचनतंत्र के लिए भी बेहद फायदेमंद है।

5 चने की दाल जिंक, कैल्शियम, प्रोटीन, फोलेट आदि से भरपूर होने के कारण आपको आवश्यक व जरूरी ऊर्जा देती है। इसके अलावा यह पेट की समस्याओं के लिए भी फायदेमंद है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

मनोहर के परिवार को मिला सहारा

मैं मनोहर लाल मीणा 38 साल अपने 4 बच्चों व पत्नी के साथ उदयपुर की सरू पंचायत में रहता हूं। तीन साल पहले पास के स्कूल में बिजली ठीक करने गया था। अचानक करंट लगने से कमर और रीढ़ की हड्डी क्षतिग्रस्त हो गई। अब भी चल– फिर नहीं सकता। कमर के नीचे से पूरी तरह विकलांग हूं, इलाज हेतु 2 लाख में खेत भी बेच दिया, फिर भी ठीक नहीं हुआ। तीन साल से बिस्तर पर पड़ा हूं। घर में कमाने वाला कोई नहीं है, इसलिए बच्चों ने पढ़ाई छोड़ दी। एक बच्चा काम पर जाता है, पत्नी–बच्चा मजदूरी करके सबका गुजारा कर रहे हैं। कई बार पास–पड़ोसी खाना दे जाते हैं। मेरी स्थिति की जानकारी नारायण सेवा संस्थान को सरपंच और पड़ोसियों ने दी। संस्थान ने हमें एक माह की राशन सामग्री (जिसमें आटा, दाल,नमक–मसाले, तेल, शक्कर, चायपत्ती) आदि की मदद की। हमें बहुत राहत मिली। इलाज का आश्वासन भी दिया कि मदद करेंगे। राशन हर माह मिल रहा है।

अनुभव अमृतम्

नासिक जिले के इगतपुरी गांव में पहुँचे, और लगभग 2007 में ठाकुर जी की कृपा से 10 दिनों का विपश्यना ध्यान बुद्धि ज्ञान योग यह विद्या प्राप्त की। विपश्यना को प्रणाम तो भैया लाला बाबू बंधु माताओं बहनों भाइयों चूने की लाइनें तो बना दी गई। लेकिन मात्र चूने की लाइनों से क्या होता है? उस समय आर के शर्मा जी जो शिल्पग्राम में कला निर्देशक के रूप में बड़े सह हृदय महानुभाव उनका प्रेम प्राप्त हुआ। घंटे 2 घंटे रोज के लिए वह पधारते थे। इसी तरह से आदरणीय इंजीनियर साहब का स्नेह प्राप्त हुआ, और चित्रों से यह हार्ट बनेगा 20 फिट लंबा 20 फिट ऊंचा 20 फिट चौड़ा अच्छा इतना, ऊंचा बनाओगे। कैसे बनेगा सुमेरपुर से माननीय गोविंद जी उनकी बड़ी कृपा मानता हूँ। मैं उनके भाई सुरेश जी उनके बड़े भाई साहब जो हमें स्वर्ग से आशीर्वाद दे रहे हैं। अमर चंद जी साहब लंबी लंबी बैठकें चली। फाइबर कब बनेगा? फायर फूड बनेगा और ठाकुर जी की कृपा से पहले चंडीगढ़ से भी एक साहब आए। उन्होंने कहा कैलाश जी मैं बना लूंगा बना कर ले आऊंगा। मैंने कहा साहब यहीं बनाना हुकम। शून्य से शुरुआत यहीं करनी है। उन्होंने कहा कि ऐसा तो कैसे हो सकता है? इसमें 4 मिनट लगेंगे मैंने कहा आपके 4 मिनट लग गए। आप इंजीनियर साहब है। आपके उचित आवास निवास की व्यवस्था रहेगी। उन्होंने कहा नहीं नहीं मैं बना कर ला सकता हूँ। उन्होंने कहा नहीं साहब, यह ठाकुर जी की कृपा का प्रसाद है कोलकाता भेजा दिग्विजय सिंह जी को। कोलकाता के एक कुमारवाड़ा में ठीक ठीकाने पहुँचे। और उन्होंने चित्र बताकर कुमार वाडा के कलाकारों में से खास को पूछा भाई ऐसा बनाना है। वह बोला ऐसा तो पहले हमने कभी बनाया नहीं। हार्ड तो बनाया नहीं। गर्दन तो बनाई नहीं। यह चेहरा तो बनाया नहीं। मैंने उनको फोन करके कहा हनुमान जी की मूर्ति कितनी ऊंची बनाई? 105 फीट ऊंची। मैंने कहा जब हनुमान की मूर्ति आप 105 फिट बना सकते हैं, हनुमान जी की कृपा आपको प्रसाद के रूप में मिली है। यह भी चित्र है। हृदय यह कपाट, यह पहला वाल्व यहाँ अशुद्ध खून जाता है। अंदर खून गया कितनी सूक्ष्म क्रिया? हाँ, फेफड़ों से ऑक्सीजन आती है। उस अशुद्ध खून का कार्बन डाई ऑक्साइड फेफड़ा लेकर के नाक से निकाल देता है। उसी क्षण और शुद्ध वायु जो पहुँची है। शुद्ध रक्त आगे की तरफ दौड़ता है। हृदय में धड़कन होती है। कपाट खुलता है। हृदय की दीवार हिलती है– प्रतिक्षण।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 483 (कैलाश 'मानव')

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023